July 2022

Monthly Magazine
Year 7 Issue 7

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सत्युग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रात ११ बजे से ११.३० बजे तक

फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्‌घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।।नारायण नारायण।।

आज एनआरएसपी सफलता के जिस स्थान पर खड़ा है उसकी वजह सिर्फ और सिर्फ एनआरएसपी टीम का सहयोग है। सहयोग एक बहुत ही सुन्दर और ऊर्जा से भरा शब्द है, **जो कार्य की सफलता निश्चित करता है**। छोटे से छोटे कार्य की सफलता में न जाने कितने लोगों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। हम चाय बनाने के एक छोटे से कार्य को ही लेते हैं। सुबह – सुबह उठकर गृहणी चाय बनाती है। ज़रा चिंतन मनन करें कि चाय बनाने में किस – किस ने सहयोग किया ? फ़िल्टर से पानी लिया, दूध वाले का लाया हुआ दूध, शक्कर और चाय पत्ती कंपनी के उत्पाद, गैस बर्नर में जलने वाली एलपीजी गैस इन सबके सहयोग का परिणाम है हमारा छोटा–सा कार्य चाय बनाना।

यह संपूर्ण ब्रह्मांड, हम, आप, यह जीवन चल रहे हैं तो सहयोग की वजह से। छोटे – छोटे अणुओं के सहयोग से बना है यह ब्रह्मांड और यह जीवन। सूर्य, चंद्र, तारे, जीव, निर्जीव, वनस्पतियों के सहयोग से चल रही है यह दुनिया। इतना ही नहीं हमारे शरीर के एक - एक अंग आपस में एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं तब चलता है हमारा शरीर। एक पैर के दूसरे पैर से सहयोग की वजह से होती है चलने की क्रिया। आँखों के विभिन्न भागों के सहयोग से होती है देखने की प्रक्रिया। दांत, जीभ, लार और ग्रास नली से होती है खाने की प्रक्रिया और छोटी, बड़ी आंत, आमाशय के विभिन्न रस से होती है पाचन क्रिया। हृदय के माध्यम से पूरे शरीर में रक्त संचार होता है जिससे ऊर्जा उत्सर्जित होती है और शरीर चल फिर पाता है। नाक से हम ऑक्सीजन लेते और कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं तब हमारा शरीर चलता है। कितना अद्भुत भाव है यह सहयोग। अगर यह कहें कि सहयोग पर ही यह सृष्टि टिकी है तो ज्यादा बेहतर होगा। किसी की तन, मन, धन से मदद करना, किसी को देख कर मुस्कुराना, किसी को प्रोत्साहित करना, किसी के काम आना सहयोग है। **एन. आर. एस. पी. का तो सिद्धांत ही सहयोग है।**

यह संपूर्ण सृष्टि यूँ ही सुचारु रूप से चलती रहे, हर व्यक्ति, उन्नति, प्रगति, सफलता प्राप्त करे, हर घर में सुख, शांति, समृद्धि हो इसके लिए आवश्यक है कि हम सहयोग के भाव को और प्रबल और प्रबल और प्रबल करते रहें- ऐसी कामना, चाहना और ऐसी ही प्रभु से प्रार्थना।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

राजस्थानी मं डल कार्या लय

बेसमेंट रजनीगं धा बिल्डिं ग, कृ ष्ण वाटिका मार्ग ,

गोकुल धाम, गोरेगां व (ई), मुं बई - ४०० ०६३.

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	:	9712945552
आगरा	अंजनामित्तल	:	9368028590
अकोला	रिया / शोभा अग्रवाल	:	9075322783/ 9423102461
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	:	9422855590
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	:	9341402211
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	:	7045589451
बड़ोदा	दीपा अग्रवाल	:	9327784837
भंडारा	गीता शारडा	:	9371323367
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	:	8947036241
बस्ती	पूनम गाड़िया	:	9839582411
भोपाल	रेनूगट्टानी	:	9826377979
बीना (मध्यप्रदेश)	रश्मि हुरकट	:	9425425421
बनारस	अनीता भालोटिया	:	9918388543
दिल्ली (पश्चिम)	रेनू विज	:	9899277422
दिल्ली (पूर्व)	मीनू कौशल	:	9717650598
दिल्ली (प्रीतमपुरा	मेघा गुप्ता	:	9968696600
धुले	कल्पना चौरोडिया	:	9421822478
डिब्रूगढ	निर्मलाकेडिया	:	8454875517
धनबाद	विनीता दुधानी	:	9431160611
देवरिया	ज्योति छापरिया	:	7607004420
गुवाहाटी	सरला लाहौटी	:	9435042637
गुडगाँव	शीतल शर्मा	:	9910997047
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	:	9326811588
गाजियाबाद	करुणा अग्रवाल	:	9899026607
गोरखपुर	सविता नांगलिया	:	9807099210
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	:	9247819681
हरियाणा	चन्द्रकला अग्रवाल	:	9992724450
हींगन घाट	शीतल टिबरेवाल	:	9423431068
इंदौर	धनश्री शिरालकर	:	9324799502
इचलकरंजी	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
जयपुर	सुनीता शर्मा	:	9828405616
जयपुर	प्रीती शर्मा	:	7877339275
जालना	रजनी अग्रवाल	:	8888882666
झुंझुनू	पुष्पा टिबरेवाल	:	9694966254
जलगाँव	कला अग्रवाल	:	9325038277
कानपुर	नीलम अग्रवाल	:	9956359597
खामगांव	प्रदीप गरोदिया	:	8149738686
कोल्हापुर	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
कोलकत्ता	सी .एसंगीता चांडक	:	9330701290
कोलकत्ता	श्वेता केडिया	:	9831543533
मालेगांव	आरती चौधरी/रेखा गरोडिया		9673519641/ 9595659042
मोरबी (गुजरात)	कल्पना जोशी	:	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	:	9373101818
नांदेड	चंदा काबरा	:	9422415436
नासिक	सुनीता अग्रवाल	:	9892344435
नवलगढ़	ममता सिंगरोडिया	:	9460844144
पिछौरा	स्मिता मुकेश भरतिया	:	9420068183
परतवाडा	राखी अग्रवाल	:	9763263911
पूना	आभा चौधरी	:	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	:	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	:	9434012619
रायपुर	अदिति अग्रवाल	:	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	:	9431115477
रामगढ़	पूर्वी अग्रवाल	:	9661515156
राउरकेला	उमा देवी अग्रवाल	:	9776890000
शोलापुर	सुवर्णा बल्दावा	:	9561414443
सूरत	रंजना गाडिया	:	9328199171
सीकर	सुषमा अक्षवाल	:	9320066700
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुंधडा	:	9564025556
विशाखापत्तनम	मंजू गुप्ता	:	9848936660
उदयपुर	गुणवंती गोयल	:	9223563020
विजयवाड़ा	किरण झंवर	:	9703933740
वर्धा	अन्नपूर्णा	:	9975388399
यवतमाल	वंदना सूचक	:	9325218899

।।卐।।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,
नारायण नारायण

'नारायण रेकी सतसंग परिवार की सफलता का रहस्य'

जब भी कोई राज दीदी से एन. आर. एस. पी. की सफलता का रहस्य पूछता है तो दीदी सदैव कहती हैं **टीम वर्क और टीम वर्क का दूसरा नाम ही है- सहयोग ।** दीदी हमेशा कहती हैं यह परिवार का सहयोग ही है, जो घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ प्रात: और दोपहर की प्रार्थनाएं संभव हो पाती हैं । नारायण भवन निरंतर १५ महीनों से अपनी सेवाएं दे पा रहा है, उसकी वजह स्वयं सेवक और स्वयं सेविकाओं का निरंतर सहयोग है । आज दिव्य, भव्य, नारायण भवन साक्षात बन कर तैयार हो गया है इसकी वजह भी सहयोग ही है ।

आप ठीक समझे पाठक गण, सहयोग की इस खूबसूरत भावना पर आधारित है सतयुग पत्रिका का यह अंक ।

आप सभी जीवन के हर क्षेत्र में सहयोग से भरा व्यवहार ही करते रहेंगे, इन शुभकामनाओं के साथ –

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये /आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net
narayanreikisatsangparivar *@narayanreiki*

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

||नारायण नारायण||

सतयुग का शंखनाद

सहयोग का भाव वो आधारभूत इकाई है जिस पर संपूर्ण ब्रह्मांड टिका हुआ है । अनेकों अरबों, खरबों अणुओं के आपसी सहयोग का परिणाम है यह ब्रह्मांड । धरती को उसकी धुरी ने सहयोग दे रखा है तो धरती घूमती हुई भी टिकी है । चन्दा, सूरज का आपसी सहयोग है कि दिन और रात होते हैं । पंच महाभूत आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी इन सबके आपसी सहयोग से ही निर्मित होता है इस सृष्टि का कण -कण ।

सहयोग का तात्पर्य है, किसी कार्य के संपादन के लिए किसी प्राणी द्वारा किया गया कार्य । **किसी कार्य के लिए एक दूसरे का हाथ बँटाना सहयोग कहलाता है ।** आज हम जिस विकसित समाज के नुमाइंदे हैं वह समाज अनेकों महानुभावों के सहयोग का ही परिणाम है । सहयोग जीवन का आधार है । सहयोग वह पारसमणी है जो असंभव को भी संभव बना देता है । बचपन में एक कथा पढ़ी थी जो हितोपदेश में है, कपोतराज चित्रग्रीव के साथ अनेकों कबूतर आकाश में उड़े जा रहे थे । धरती पर दाना बिखरा देख सभी कबूतर नीचे उतर आए किन्तु कपोतराज नहीं । सभी कबूतर शिकारी के जाल में फंस गए । संकट के समय कपोतराज चित्रग्रीव ने उन्हें मिलकर उड़ने की राय दी । कबूतरों ने मिलकर ज़ोर लगाया और जाल को भी ले उड़े । शिकारी हाथ मलता रह गया । सहयोग का यह श्रेष्ठ उदाहरण है ।

सहयोग एक सकारात्मक और सप्रयास कार्य है जो व्यक्ति स्वेच्छा से खुशी-खुशी करता है । भारतीय धर्म ग्रंथ और भारतीय इतिहास सहयोग को वृहद रूप में देखता आ रहा है । इसका उदाहरण है हमारी भारतीय संस्कृति में अंकुरित, पल्लवित और विकसित हुई वसुधैव कुटुंबकम् की भावना । जहां हर व्यक्ति यह मानता है कि यह संपूर्ण संसार मेरा परिवार है और इस परिवार का हित मेरा हित है । इस भावना के चलते भ्रातत्व का जो भाव लोगों के बीच विकसित होता है उसमें सहयोग का भाव सहज ही विकसित हो जाता है । व्यक्ति समानुभूति से भर कर दूसरे के सुख को अपना सुख और दूसरे के दु:ख को अपना दु:ख समझने लगता है और मदद के लिए आगे बढ़ जाता है । मदद का यह भाव लोगों के भीतर दया, ममता, करुणा जैसे गुणों को विकसित करता है और मनुष्य एक सार्थक जीवन जीने की राह पर चल पड़ता है । सहयोग की प्रवृत्ति मनुष्य के भीतर मैत्री के एक बड़े ही खूबसूरत से रिश्ते को पैदा करती है । जो भी व्यक्ति आपको सहयोग करता है उसके प्रति आपके मन में प्रेम के भाव, आभार के भाव विकसित होते हैं और यह भाव सहज ही मित्रता में परिवर्तित हो जाते हैं । कृष्ण, बुद्ध, महावीर, स्वामी वेदव्यास, ईसा मसीह, इस मैत्रीवत भाव के श्रेष्ठ उदाहरण हैं जिन्होंने संपूर्ण मानव जाति को ही नहीं पशु–पक्षी, वनस्पतियों को भी अपना ही अंश माना और उनके विकास के लिए कार्य किया ।

बच्चा जब जन्म लेता है तो वह सबसे पहले सहयोग का भाव अपने परिवार से सीखता है । माँ उसको स्तनपान कराती है बाहों में झुलाती है तो पिता उसे हाथ पकड़कर चलना सिखाता है । माँ पहला अक्षर ज्ञान कराती है तो पिता विद्यालय पहुंचाता है । कभी दादी भोजन कराती है कभी बुआ-चाचा उसके साथ खेलते हैं । कभी बड़ी माँ के रूप में ताई–चाची अपना कर्तव्य निभाती हैं और बच्चा सहज ही शेयरिंग, केयरिंग सीख जाता है । बच्चा पहले घर में फिर स्कूल में फिर मित्रों के बीच व्यवहार करना सीखता है । सहयोग की भावना से ही बच्चे के भीतर मनोवैज्ञानिक वृतियाँ विकसित होती हैं । बच्चे के निर्णय करने की क्षमता विकसित होती है, बच्चा समस्याओं का समाधान करना और

निर्णय लेना सीखता है । आर्थिक उन्नति तो सहयोग पर ही निर्भर है । पिछले दिनों विश्व जिस दौर से गुज़रा उसमें सहयोग का भाव तेजी से उभरा । न जाने कितने डॉक्टर्स ने अपने अस्पताल अनजान लोगों के लिए नि:शुल्क खोल दिए, न जाने कितने लोगों ने अपनी जमीनें आपातकालीन अस्पताल बनाने के लिए दे दीं । अनगिनत संस्थाओं ने घर-घर तक दवाई और भोजन पहुंचाने की व्यवस्था की । विश्व संकट का समय था पर सहयोग के भाव ने उस पर विजय पाई और आज फिर संपूर्ण विश्व उसी आन, बान और शान के साथ सीना तान के खड़ा है ।

हम घर के छोटे-छोटे कार्यों में, जैसे साफ-सफाई (cleaning), खाना बनाना (cooking), बर्तन धोना (washing dishes) और कपड़े धोना (washing) व अन्य में माता पिता का हाथ बँटा सकते हैं । हम बाज़ार (market) से दूध (milk), फल (fruits), सब्जियां (vegetables) आदि लाकर घर पर ही मदद (help) कर सकते हैं ।

बिजली (Electricity), पानी और टेलीफोन बिलों (telephone bills) का भुगतान समय पर किया जा सकता है। घर में निर्धारित (designated) स्थान पर सामान रखकर, खाना परोस कर, खाने के बाद, डाइनिंग टेबल (dining table) से बर्तन उठाकर किचन में रख कर, छोटे भाई-बहनों (brothers-sisters) को पढ़ाकर हम घर में एक दूसरे का साथ दे सकते हैं। घर के छोटे सदस्य (members) बगीचे में पौधों (plants) को पानी देकर, इधर-उधर कागज (paper) न फेंककर खिलौनों आदि से खेलकर उन्हें निर्धारित स्थान पर रख कर मदद कर सकते हैं । घर में बीमार पड़ने (falls ill) वाले व्यक्ति (person) के लिए दवाइयों (medicine) की व्यवस्था करके और उसकी सेवा करके भी हम सहयोग (cooperate) कर सकते हैं, इस प्रकार आपसी सहयोग से घर सुखी (happy) हो जाएगा । सामाजिक तौर पर हम प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग करके, बिजली पानी की बचत करके, इनकम टैक्स समय पर भरकर राष्ट्र को सहयोग कर सकते हैं । अपने पड़ोसियों की आवश्यकता होने पर मदद करके, जरूरत होने पर मित्रों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होकर, रिश्तेदारों को यथा संभव, मदद करके सहयोग की भावना को विकसित कर सकते हैं ।

मेरा तो मानना है कि आप योग करें न करें पर दूसरों को सहयोग जरूर करें, क्योंकि सहयोग का भाव ही इस सृष्टि को अंनत: रूप में टिकाए हुए है ।

मेघना तापड़िया को जन्मदिन (२ जुलाई) पर सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत सफलता भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद मिले और जीवन में सफलता प्राप्त करें।

नम्रता राठी को जन्मदिन (२३ जुलाई) पर सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत सफलता भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद प्राप्त करें और जीवन में सफलता प्राप्त करें।

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

ज्ञान मँजूषा

ज्ञान मंजूषा हमारी सतयुग पत्रिका का एक ऐसा स्तंभ है जो कि ज्ञान वर्धक होने के साथ-साथ बहुत ही सहज और सरल है । यह इतना सहज है कि पढ़ने वाला इसे बड़ी ही आसानी से अपने जीवन में उतार सकता है और अपने जीवन को सप्त सितारा बना सकता है । पेश हैं ऐसे ही कुछ टिप्स :-

१) **द मैजिक औफ थिंकिंग बिग** के लेखक लिखते हैं कि दिन भर में हमारे दिमाग में बहुत सारे विचार आते हैं, यहां पर उनका कहना है कि हमारे मस्तिष्क में 'दो फोर मैन' यानि कि **'दो वाचमैन'** बैठे हुए हैं । उन्होंने उनका नाम **मिस्टर नेगेटिव और मिस्टर पॉजीटिव** बताया । ज्यों ही हमारी वाणी तेज हुई और हमने बहस करना शुरू किया, शरीर में नकारात्मक तरंगों का प्रवेश शुरू हो जाता है । ये नेगेटिव तरंगें शरीर के भीतर हैं और ये हमारे अस्वस्थ होने का बहुत बड़ा कारण हैं । इन तरंगों की वजह से व्यक्ति का स्वभाव, व्यापार, व्यवहार सभी अस्वस्थ हो जाता है ।

२) यह तरंगें जितनी तेज और तीखी होती है उतने ही अस्वस्थ हमारे तन, मन, धन, संबंधों का पैकेज होता है । ये तरंगें दिखाई नहीं देती, अदृश्य होती है । ये हैल्थ और वैल्थ दोनों पर इफैक्ट करती है ।'बड़ी सोच का बड़ा जादू' के लेखक मिस्टर डेविड कहते हैं, कि दोनों तरंगे बहुत एक्टिव हैं ।

३) यह प्रकृति, यह ब्रह्मांड हमें कभी भी देते नहीं है ये सिर्फ हमें लौटाते हैं जो कुछ भी हमने दिया है उसे कई गुणा कर के । जिस किसी को भी किसी चीज की जरूरत है चाहे तन से सेवा देनी है, या धन से, तो अवश्य मदद करें । यदि आप कुछ नहीं कर सकते तो ईश्वर से प्रार्थना अवश्य करें । प्रकृति देती नहीं है वह सिर्फ लौटाती है, जो आपने उसे दिया है ।

४) हर कोई एक स्वस्थ जीवन, प्रचुर मात्रा में धन और खुशी, उत्साह और आनंद से भरा आनंदमय जीवन चाहता है । राघव बताते हैं कि इन चीजों को हासिल करने के लिए हर कोई प्रयास करता है । कड़ी मेहनत के बावजूद कभी-कभी इन चीजों को प्राप्त नहीं कर पाता क्योंकि कुछ सावधानियों का पालन करता होता है । लोग अक्सर उस घटना को क्यों थामे बैठे रहते हैं जो घटना हो चुकी है ।

उस घटना के बाबत सोच कर कुछ हासिल नहीं होने वाला है । तो फिर क्यों हम उन रिश्तों को थामे बैठे हैं जो कभी के खत्म हो गए । क्यों उस दुःख दर्द को हमने पकड़ रखा है जो किसी ने हमें कुछ समय पहले या बरसों पहले दिया था । उन्हें पकड़ कर रखने से कुछ हासिल नहीं होने वाला सिवाय घाव हरे होने के । जो घटना तुम्हें तकलीफ दे रही है, उसे छोड़ दो, रिलैक्स हो जाओ ।

५) छोड़ना हमारी चॉइस है । कल्याणी ने भी यह सिखाया कि जो चीज हमें दुःख दे रही है उसे छोड़ना बहुत ही बेहतर है ।

६) **प्रकृति हमें हर अवस्था में चुनाव करने का मौका देती है ।** यह हम पर निर्भर करता है हम क्या चुनते हैं । यदि हम सही और उचित चुनते हैं तो यह हमें मानसिक शांति देगा जिसकी हमें जरूरत है । पर यदि हम विचारों में

बहकर गलत चुनते हैं तो यह हमें मानसिक अशांति देगा और तनाव में खड़ा कर देगा। जब हमें प्रकृति चुनाव करने का मौका देती है तो क्यों ना सही और उचित चुनें, अपने जीवन मूल्यों को ध्यान में रख कर चुनें। हो सकता है इसके लिए आपको कड़ी मेहनत करनी पड़े लेकिन यह कड़ी मेहनत अंत में आपको खुशी और सफलता देगी।

७) जब आप अपने अंदर हर्ट रखते हैं, तो यह एक गर्म पानी के गिलास को रखने जैसा है, जितना अधिक समय तक आप इसे पकड़ेंगे, यह आपको उतना ही अधिक नुकसान पहुंचाएगा। अगर आप आहत रहेंगे तो आपको यह बोझ हर जगह ढोना होगा। प्रतिकूल परिस्थितियां आपको कष्ट देती हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों और कष्टदायक घटनाओं को छोड़ देना ही अच्छा है, और जीवन में आगे बढ़ना उचित है।

८) अगर आप एक खुशहाल जीवन जी रहे हैं तो यह निश्चित है कि आप दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं और आपको ब्रह्मांड से कई गुना आशीर्वाद प्राप्त होता है।

९) दीदी ने सत्संगियों को एक नोट बुक बनाने और रोज़ाना लिखने के लिए कहा कि कैसे उन्होंने दूसरों की मदद की, धन से, प्रार्थना के माध्यम से या किसी अन्य माध्यम से। दीदी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हम जो भी अच्छा करते हैं वह हमें कई गुणा होकर मिलता है।

१०) अच्छा है कोई दुर्घटना होने से पहले, किसी को नुकसान पहुंचने से पहले हम एहतियात ले लें। जीवन में यदि दुआ बटोरते रहे तो दवा की जरूरत नहीं पड़ेगी।

मित्रों, इन छोटे-छोटे टिप्स को अपनाएं और जीवन को बड़ी ही आसानी से सप्त सितारा बना लें।

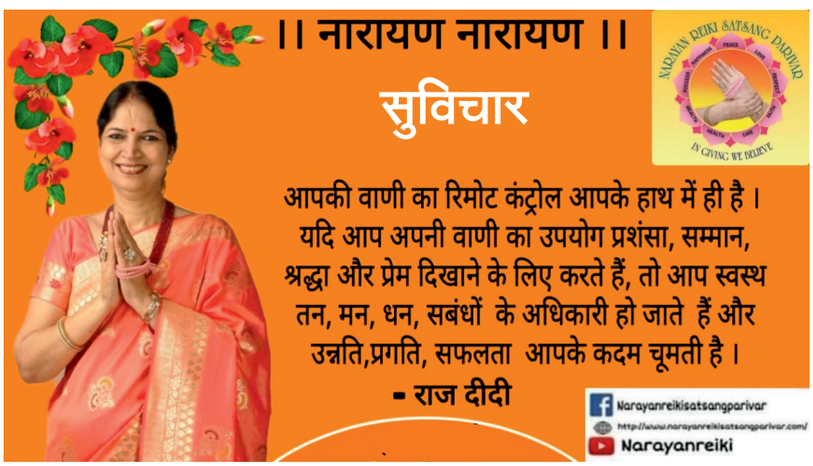

॥ 卐 ॥

युवा मंच

मिलजुल कर कार्य करने को सहयोग कहते हैं । अर्थात **सहयोग चेतन अवस्था है जिसमें संगठित एवं सामूहिक प्रयत्न किए जाते हैं क्योंकि समान उद्देश्य होता है ।** सभी की सहभागिता होती है, क्रियाओं एवं विचारों का आदान-प्रदान होता है । अन्तःक्रिया सकारात्मक होती है तथा सहायता करने की प्रवृत्ति पायी जाती है । सभी व्यक्ति अपने उत्तरदायित्व पूरे करते हैं, अपनी जिम्मेदारियों का निष्पादन ईमानदारी, वफ़ादारी व निष्ठा से करते हैं ।

नारायण रेकी सत्संग परिवार से अच्छा उदाहरण और कहाँ मिलेगा सहयोग की भावना का । प्रारंभ से ही राज दीदी के नेतृत्व में जो टीम बनी, जिस प्रकार छोटे से लेकर विशाल सत्रों का आयोजन किया गया - सभी भौंचक्के रह जाते । लोगों के आश्चर्य का ठिकाना ना रहता । काम कब व कैसे हो जाता किसी को पता ही नहीं चलता । आज के परिपेक्ष में देखें तो इसी सहयोग के फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में नारायण रेकी सत्संग परिवार का परचम लहरा रहा है । सभी गतिविधियाँ अत्यंत सुचारु रूप से चल रहीं हैं - चाहे नारायण भवन में हो रही प्रार्थनाएँ, नारायण व करुणा रेकी का प्रशिक्षण, विश्व भर से आ रही प्रार्थनाएँ, सेंटर पर चल रहे अनेकों छोटे बड़े काम ।

किसी भी घर, कंपनी या देश की सफलता उसके सदस्यों के आपसी सहयोग पर निर्भर करती है । एक और एक मिल कर जब ग्यारह हो जाते हैं तो कीर्तिमान बनते हैं ।

राम सेतु बनाने का काम जब पूरे जोर-शोर से चल रहा था, तब एक छोटी सी गिलहरी समुद्र तट पर बैठी सारा दृश्य देख रही थी । उसके छोटे से मन में यह बात आई कि भगवान को सहयोग की आवश्यकता है और जब यह सारे बंदर उन्हें सहयोग कर रहे हैं, तो मुझे भी इस काम में हाथ बंटाना चाहिए ।

उस नन्हीं गिलहरी ने थोड़ी देर तक सब काम होते हुए देखा और पत्थर उठाने की कोशिश भी की, पर सफल ना हो सकी । इसके बावजूद उसने हार ना मानी और बहुत सोच-विचार कर सहयोग करने का तरीका ढूंढ ही लिया । वह पहले समुद्र के पानी में अपनी पूंछ डुबोती, फिर वापस तट पर आकर अपनी पूंछ रेत पर फेरती और जो रेतकण उसकी पूंछ पर चिपक जाते, उन्हें सेतु पर डाल आती । वह दिनभर अपने काम में लगी रही । कुछ वानरों ने उसे देखा और उसका मजाक भी उड़ाया, पर जन-जन और कण-कण का मान रखने वाले श्री राम ने उसके मन की लगन को समझा । शाम ढलने पर उन्होंने स्वयं गिलहरी को अपने पास बुलाया और उसकी पीठ पर हाथ फेरकर उसे शाबाशी और धन्यवाद दोनों दिए । **कहते हैं कि उसी दिन से गिलहरियों के शरीर पर राम जी की अंगुलियों के निशान रेखाओं के रूप में पड़ गए ।**

यदि वह गिलहरी भी यही सोचती कि इतने बड़े काम में मैं क्या सहयोग कर सकती हूं, तो क्या वह इस अमर स्नेह की प्राप्ति कर पाती? इसीलिए सोचिए मत, बस सहयोग में जुट जाइए । **जहां, जितना और जिस रूप में सहयोग कर सकें, कीजिए ।** आपका छोटा-सा सहयोग ना केवल दूसरों के लिए, बल्कि आपके लिए भी बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकता है ।

युवा शक्ति असीमित है, अपनी शक्ति से अपने से जुड़े हर व्यक्ति व परिवेश को बेहतर बनाने में सहयोग करिए और सतयुग को साकार करिए ।

।।卐।।

बच्चों की फुलवारी

इस अंक में हम टीम भावना के महत्व पर प्रकाश डाल रहे हैं।

टीम भावना से आप क्या तात्पर्य है? राज दीदी कहती हैं कि आपकी हर उपलब्धि में आपके साथ जुड़े कई लोगों का सहयोग होता है, क्योंकि उनके समर्थन और उनके मार्गदर्शन से आपने वह हासिल कर लिया है जो आपने अपना लक्ष्य रखा था।

टीम भावना विकास और प्रगति के लिए बहुत आवश्यक है चाहे वह व्यक्तिगत हो या व्यावसायिक मोर्चे पर।

जब बोर्ड का रिजल्ट आता है तो स्कूल का रिजल्ट शत-प्रतिशत आने पर प्रधानाध्यापक खुश होते हैं। स्कूल को उस बच्चे पर गर्व होता है जिसने टॉप किया है, लेकिन मात्रात्मक रूप से जब प्रत्येक छात्र अच्छा स्कोर हासिल करता है तो स्कूल नाम और प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

क्रिकेट एक बहुत ही लोकप्रिय खेल है। खेल में ११ खिलाड़ी होते हैं और जीत तभी होती है जब सभी खिलाड़ी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। यह भी जरूरी है कि टीम का कप्तान टीम भावना और सभी खिलाड़ियों का सहयोग सुनिश्चित करें फिर कप्तान के मार्गदर्शन पर टीम का हर सदस्य अपना सर्वश्रेष्ठ देता है और तब जीत हासिल होती है।

जब हम सहयोग की भावना से ओत प्रोत होते हैं, तो हमें टीम को एक साथ रखना आवश्यक होता है। ऐसे में जो टीम लीडर या कप्तान होता है वह व्यक्तिगत निर्णय नहीं लेता बल्कि पूरी टीम की इच्छा एवं सुझावों को सुन कर उनसे विचारविमर्श करने के उपरान्त वह अपनी कार्यपद्धति निर्धारित करता है। टीम के प्रत्येक सदस्य को भी यह समझना चाहिए कि परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों अपने टीम लीडर के निर्णय में उनका शत प्रतिशत समर्थन होना चाहिए और कंधे से कंधा मिलाकर उन्हें अपने कप्तान के साथ खड़ा होना चाहिए।

एनआरएसपी सहयोग का एक बेहतरीन उदाहरण है जिसमें राज दीदी अपनी टीम को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए समर्थन और मार्गदर्शन करते हैं और इसलिए आज हमारी संस्था ने विश्व स्तर पर महान ऊंचाइयों को हासिल किया है। एनआरएसपी का परचम आकाश छू रहा है। जब हम किसी टीम का हिस्सा होते हैं तो हमें यह भी सुनिश्चित करना होता है कि हमारा प्रदर्शन टीम के विकास और प्रगति के अनुरूप हो। हमें इस जागरूकता के साथ काम करना चाहिए कि मेरा हर एक कार्य टीम की बेहतरी के लिए होना चाहिए। जब हम टीम को अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे तो न केवल हमारा विकास होगा बल्कि टीम के नाम के साथ प्रसिद्धि और पैसा भी हमारा होगा।

एनआरएसपी की टीम भावना को नमन।

केदार राठी को जन्मदिन (२९ जुलाई) पर सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत सफलता भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद प्राप्त करें और जीवन में सफलता प्राप्त करें।

दीदी के छाँव तले

एनआरएसपी का विकास और प्रगति इस बात का एक श्रेष्ठ उदाहरण है कि कैसे अपने गुरु और संरक्षक राजदीदी के मार्गदर्शन में प्रत्येक सदस्य के मन में केवल एक ही विचार है एक ही ख्याल है और वह है - संस्था की प्रगति और इसे प्राप्त करने के लिए एकजुट होकर काम करना। सतसंगियों का यह सहयोग भाव ही एनआरएसपी के विकास का रहस्य है। चाहे संस्था की संस्थापिका राजदीदी हों या इसके सक्षम ट्रस्टी, राजदीदी का समर्थन करने वाली उनकी कोर टीम, नारायणधाम की टीम या सभी केंद्र प्रमुखों और उनकी संबंधित टीम हर सतसंगी जो एक एनआरएसपी है, केवल एक ही विचार कि मैं एनआरएसपी के विकास के लिए किस तरह सहयोग कर सकता हूं।

ऑनलाइन नारायण भवन की सफलता इसकी समर्पित टीम की कर्तव्यनिष्ठा की कहानी है। भवन के खजाने से कुछ प्रेरणादायक शेयरिंग।

रिएक्शन की बजाय रिस्पॉन्स दिया, उसके परिणाम: -

मेरे कार्यालय में मेरे बॉस को एक साथ कई दिनों के लिए अचानक छुट्टी लेने की आदत है, जिसके परिणामस्वरूप मुझ पर अतिरिक्त काम का बोझ पड़ता है। वह स्वभाव से थोड़ी सी असभ्य हैं। हर बार जब वह छुट्टियों से वापस आतीं, तो मैं अपने व्यवहार और कार्यों से नकारात्मक वाइब्रेशन देती। इसकी वजह से हम दोनों के बीच कई दिनों तक तनातनी चलती।

हाल ही में फिर ऐसा हुआ कि वह फिर वेकेशन पर गईं। कुछ दिन पहले आपके सत्संग से मुझे पता चला कि हमें रिस्पांस देना है रिएक्शन नहीं। इसलिए इस बार जब वह वापस आईं, तो मैंने कोई नाराज़गी नहीं जताई, बल्कि बस उन्हें जाने से पहले मेरा मार्गदर्शन करने का अनुरोध किया। तब से मैं उनके बदले हुए व्यवहार पर चकित हूं क्योंकि अब वह बहुत प्यार से बोलती हैं और मेरे काम और मेरी लिखावट की मेरे सहयोगियों के सामने प्रशंसा भी करती हैं। मेरे पति, मेरे सहकर्मी और मैं खुद उनमें इस भारी बदलाव से चकित हैं। आपके नेक मार्गदर्शन के लिए बहुत बहुत धन्यवाद दीदी। दीदी ने उसकी सराहना की और कहा कि प्रकृति ने फिर से सही संदेश दिया है कि जब हम प्रतिक्रिया करते हैं, तो हम स्वयं अपने जीवन में प्रवेश करने के लिए समृद्धि को रोकते हैं और जब हम शांत रह कर रिस्पॉन्स देते हैं तो प्रकृति सुनिश्चित करती है कि समृद्धि हमारे जीवन में आए और बनी रहे।

सशमिता उड़ीसा :- दीदी, मैं आपके सानिध्य में एक महीने से मन, वचन और कर्म के अनुशासन का अभ्यास कर रही हूँ। नतीजतन, मेरे पति खाने की मेज पर, भोजन के लिए अपना आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही उन्होंने मुझे केवल सकारात्मक शब्द बोलने पर जोर देने के लिए धन्यवाद दिया। यह किसी चमत्कार से कम नहीं है कि हमारी शादीशुदा जिंदगी के १८ साल में एक महीना बिना किसी लड़ाई-झगड़े या हमारे बीच आवाज उठाए बिना गुजर गया।

पहले जब मेरे ८० साल के माता-पिता मुझसे मिलने आते थे, तो खाना आदि बिखर जाने पर मैं चिढ़ जाती थी

और चिल्लाती थी। लेकिन इस बार चार दिनों में से उनके लिए, मेरे विचार थे, कि नारायण खुद आए हैं मेरे घर में, नारायण मेरे घर को पवित्र बना रहे हैं और दिव्य आशीर्वाद बरसा रहे हैं। दीदी आपके मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद।

अमेरिका से शेयरिंग :- दीदी, कल जब मेरे पति काम से घर वापस आए तो वह बहुत गुस्से में थे और मुझ पर चिल्लाए। चूंकि मैंने सुबह के सत्र में भाग लिया था जिसमें आपने रेस्पॉन्स और रिएक्शन के बारे में बताया था, मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और लगातार नारायण प्रार्थना करती रही और नारायण से मार्गदर्शन भी मांग रही थी कि अगर मुझसे कोई कोई गलती हो तो मुझे माफ कर दें। रात चैन से गुज़री और वो सुबह किसी चमत्कार से कम नहीं थी जब मेरे पति ने मुझसे माफ़ी मांगी।

दीदी कहती हैं :- जब हम अपनी भावनाओं को भीतर से शुद्ध रखते हैं और ध्यान करते हैं और शांत रहते हैं तो खुद के भीतर झाँकते हैं और झुक जाते हैं तब आप शक्तिशाली कहलाएंगे जब सामने वाला प्रतिकूल व्यवहार कर रहा हो और आपके पास प्रतिकूल व्यवहार करने की पूरी क्षमता भी हो, फिर भी आप प्रतिक्रिया देने के बजाय शांति से रिस्पॉन्स दे रहे हैं। नारायण शास्त्र के अनुसार, तब आप वास्तव में शक्तिशाली हैं।

सहयोग पुल

नालपुर गांव पहाड़ियों और जंगल के बीचों - बीच बसा हुआ था। नाले के कारण ही गाँव का नाम नालपुर रखा गया था जो कि गाँव की प्रगति को रोके रखा था। बरसात में उसका रूप इतना भयानक होता था कि उसमें पाँव डालने तक की हिम्मत नहीं होती थी। चौमासे भर यह लम्बा - चौड़ा नाला गाँव को पूरी तरह से अन्य इलाकों से काट देता था। चार महीने नालपुर गांव के निवासी बाहरी दुनिया से एकदम अलग हो जाया करते थे। जब चौमासे में कोई गंभीर बीमारी का शिकार होता, किसी महिला की तबीयत बिगड़ जाती तब बड़ी परेशानी होती। ऐसे मौके पर जब मरीज को अस्पताल पहुंचाना बहुत जरूरी होता, तब सामने बहता हुआ नाला, नालपुर के ग्रामवासियों को साक्षात यमदूत की तरह लगता था। कभी-कभी डोंगा या कश्ती डालकर पार उतरने की कोशिश भी की गई, पर तेज बहाव ने अच्छे-अच्छे लोगों को डुबो दिया।

इस गाँव में थोड़ा पढ़ा-लिखा और समझदार युवक शिवनारायण था। नए जमाने की नई हवा, नई रीति, और नए विचार इस युवक के मन में लहरा रहे थे। अपने गाँव के पिछड़ेपन से वह बहुत दु:खी रहता था। उसने कई बार लोगों को संगठित करना चाहा कि सब आपस में मिलकर नाले पर पुल बनाने की कोशिश करें किन्तु सभी लोग एकमत न हो सके। शिवनारायण की बात का समर्थन यदि किसी ने किया तो वे थे हकीम साहब। ग्रामवासी हकीम साहब का बहुत सम्मान करते थे। वे उनकी छोटी - मोटी बीमारियों का इलाज कर दिया करते थे। वे गाँववालों के लिए डूबते को तिनके का सहारा थे।

इस बरसात में नाला उफान पर था। गाँव दो माह से बाहरी दुनिया से कटा हुआ था। एक घटना से सारे गाँव वाले दहल गए। रात में वृद्ध हकीम साहब को दिल का दौरा पड़ा। उनकी बेहोशी और बिगड़ती हालत देखकर सारे गाँववाले एकत्र हो गए। जैसे - तैसे रात कटी, सभी चाहते थे कि हकीम साहब को अस्पताल ले जाएँ या कस्बे से डॉक्टर को लेकर आएँ। लेकिन उनके चाहने से क्या होता? उफनता नाला सामने जो था। हकीम साहब इलाज के अभाव में चल बसे। इस घटना से शिवनारायण सबसे ज्यादा दु:खी हुआ। आखिर वह बोल ही पड़ा, 'अगर आप लोग समय रहते मेरी बात मान लेते तो यह नौबत न आती।' उसी समय सभी गाँववालों ने कसम खाई कि अपने श्रमदान से नाले पर पुल बनाने की कोशिश करेंगे। गर्मी में जब नाले का पानी कम था, गाँव वाले संगठित होकर पुल बनाने में जुट गए। गाँव का हर व्यक्ति अपने - अपने साधन लिए हुए पुल बनाने को तैयार था। यह बात जब जिला अधिकारियों तक पहुँची तो उन्होंने गाँव वालों का उत्साह देखकर शासन की ओर से तकनीकी और आर्थिक सहायता प्रदान की। इससे ग्रामवासियों का उत्साह और बढ़ गया। महिला, पुरुष सभी उत्साह से श्रमदान में जुट गए। देखते ही देखते पुल के उद्घाटन की बात आई। शिवनारायण के साथ गाँव के बड़े - बूढ़े लोग जिलाध्यक्ष महोदय के पास गए और पुल के उद्घाटन हेतु निवेदन किया। जिलाध्यक्ष महोदय ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। पुल के उद्घाटन के दिन पुल को सजाया गया। गाँव में पहली बार इतना बड़ा आयोजन हो रहा था। गाँववालों ने

अधिकारियों का स्वागत कर जिलाध्यक्ष महोदय से फीता काटकर पुल का उद्घाटन करने का अनुरोध किया। जिलाध्यक्ष ग्रामवासियों के आपसी सहयोग और श्रम देखकर बहुत खुश हुए और गाँव की सबसे बुजुर्ग महिला और पुरुष से फीता कटवाकर पुल का उद्घाटन किया। पुल का उद्घाटन करते हुए जिलाध्यक्ष ने कहा, 'इस पुल का नाम सहयोग पुल है। जानते हैं इस पुल का उद्घाटन मैंने आप लोगों से ही कराया क्योंकि यह पुल आपके सहयोग से बना है। सहयोग का पुल अब नालपुर की तरक्की के द्वार खोलेगा।'

मंदी का दौर

सन् १९३० में इंग्लैंड में मंदी का दौर था। वहाँ कपड़े की एक पुरानी मिल घाटे में चल रही थीं। मालिक को लगा कि वो अगर इस मंदी से निकलने का प्रयास करें तो कैसे करें। जब मालिक को कुछ भी नहीं सूझ रहा था तो उन्होंने यह बात मज़दूरों से कह देना ज़्यादा उचित समझा कि वे अब काम पर उन मज़दूरों को नहीं रख सकते। एक दिन मिल मालिक ने मज़दूरों को बुलाकर कहा कि – 'घाटा इतना अधिक बढ़ गया है कि मिल अब दिवालिया घोषित होने जा रही है। हमारी आपकी लम्बी मित्रता का अंत होने वाला है।'

अगले दिन सारे मज़दूर मिलकर एक साथ मालिक के केबिन में घुसे। उनमें से प्रत्येक ने बारी-बारी से अपनी बैंक पास बुक मालिक की मेज़ पर रख दी और कहा कि मालिक हम सब आपके साथ हैं, हमारी जितनी भी जमा पूँजी है उसे आप ले लीजिए और घाटा पूरा करके मिल चालू रखिए, आप हिम्मत मत हारिए, बल्कि प्रयासरत रहिए, सफलता हमें अवश्य मिलेगी। मालिक के साथ मज़दूरों की हिम्मत और सहयोग ने उसे दुबारा प्रयास करने के लिए प्रेरणा दी।

उन हज़ारों पास बुकों को लेकर मालिक बैंक पहुंचा। बैंक अधिकारी भी इतनी पास बुक देखकर हैरान हो गए। कुछ देर सोचने के बाद वे इस नतीजे पर पहुँचे कि जिस मिल के मालिक और मज़दूरों में इतना सहयोग हो उनके भविष्य में कभी अंधेरा नहीं हो सकता। लिहाज़ा बैंक अधिकारियों ने मिल को उधार देने का फैसला किया। मिल फिर से चालू हुई और संकट के बादल भी धीरे- धीरे छँटने लगे।

आख़िर में मज़दूरों के सहयोग और मालिक की हिम्मत ने उसे इस संकट (मंदी) से उभरने की ताक़त दी और जीत हिम्मत और सहयोग की हुई।

दोस्तों विपरीत परिस्थितियाँ आएं तो हिम्मत के साथ–साथ सहयोग से कार्य करें और जीवन में सफलता प्राप्त करें।.

॥ 卐 ॥

अमिताभ और असलम

एक बच्चा था अमिताभ। वह अपने माता -पिता के साथ एक गाँव में रहता था। कुछ दिनों से वह शाम को देर से घर आ रहा था। माँ को शंका हुई कि कहीं वह बुरी संगत में तो नहीं पड़ गया। आखिर रोज अधिक पैसे माँगने और देर से आने का कारण क्या है? माँ ने अपनी शंका अमिताभ के पिता को भी बताई।

पिता जी ने अमिताभ को बुलाकर प्रेम से पूछा। पर अमिताभ बराबर यही कहता रहा, 'ऐसी कोई बात नहीं है, पिता जी, आप बेकार शंका करते हैं। मैं कोई गलत काम नहीं कर रहा हूँ।'

पिता जी को गुस्सा आ गया। उन्होंने उसे पीट दिया। वह रोता हुआ चला गया। उस दिन से उसने पैसे माँगना बिल्कुल बंद कर दिया। पर देर से घर आने की आदत में कोई परिवर्तन नहीं आया।

समय बीतता गया। वार्षिक परीक्षाएं हुई। माँ को तो बहुत चिन्ता थी पर जब परिणाम निकला तो वे आश्चर्य चकित रह गई अमिताभ इस बार फिर प्रथम आया था। उसकी गलत आदतों के कारण वे बहुत डर रहीं थीं। पर उनकी सारी शंका निर्मूल निकली उन्होंने उसे छाती से लगा लिया।

'माँ जानती हैं असलम द्वितीय आया है।'

ये चौथी बार था जब अमिताभ ने कहा था, असलम द्वितीय आया है। माँ ने कहा, क्या बात है आज असलम की बहुत तारीफ़ हो रही है, ये असलम कौन है?' असलम मेरा दोस्त है। इस वर्ष स्कूल में नया आया है। वह बहुत गरीब है। उसके पिता नहीं हैं, उसकी माँ उसे पढ़ाने के लिए बहुत मेहनत करती है। असलम भी बहुत परिश्रमी है। किसी को विश्वास नहीं था कि वो द्वितीय आयेगा। लेकिन उसकी मेहनत रंग लाई।'

कहते- कहते अमिताभ का चेहरा चमक उठा।

लेकिन तुम्हारे सहयोग के बिना असलम अपनी इस सफलता की कल्पना भी नहीं कर सकता था। माँ और अमिताभ ने चौंक कर देखा, दरवाजे पर असलम खड़ा था, अमिताभ ने माँ को बताया, यही है मेरा दोस्त असलम।

माँ प्यार से उसे अन्दर ले आयी। असलम ने झुक कर माँ के चरण छू लिये, चाची अगर अमिताभ मेरी सहायता न करता तो द्वितीय श्रेणी में पास होने की बात तो दूर, मैं पास होने की भी आशा नहीं करता था। शायद मेरी पढ़ाई ही छूट चुकी होती।

असलम की आँखों में आँसू आ गये, मेरी माँ बहुत गरीब है। वो मेरी पुस्तकें भी नहीं खरीद सकती। अमिताभ ने अपने पैसों से मेरे लिए किताबें खरीदीं, मेरी फीस जमा कराई यही नहीं पढ़ाई में भी मेरी मदद की... मैं... मैं... आप लोगों का ये एहसान...अमिताभ ने उसके मुँह पर हाथ रखते हुए कहा, एहसान की बात करके दोस्ती को गाली न दो। माँ ने प्यार से दोनों को गले लगा लिया। अमिताभ का देर से घर आना, अधिक पैसे माँगने का रहस्य उनकी समझ में आ गया था।

नारायण नारायण

गुरु के पद वंदन करूं
पावन जिनका नाम
राज करती है हम सब के
दिलों पर जैसा उनका नाम
राम नाम की महिमा का
दीया विश्व को उपहार
बच्चे बूढ़े सभी तर गए लेकर जिनका नाम
सुख और शांति के मोती पिरो कर
रिश्तो को परिभाषित किया है आपने
सादगी और निश्चलता से
हर एक को अपना बनाया है आपने
घर-घर सत्संग की जो जोत जली
हो गया रोशन आंगन आंगन.
युवा पीढ़ी ने महिमा जानी इसकी
और उजाला फैलाया चारों ओर.
करूं क्या मैं अर्पण आपको,
करूं क्या मै अर्पण आपको.
दिल कहता है बार-बार आभार
और अभिनंदन आपको.
नारायण नारायण

- शशि गोयल

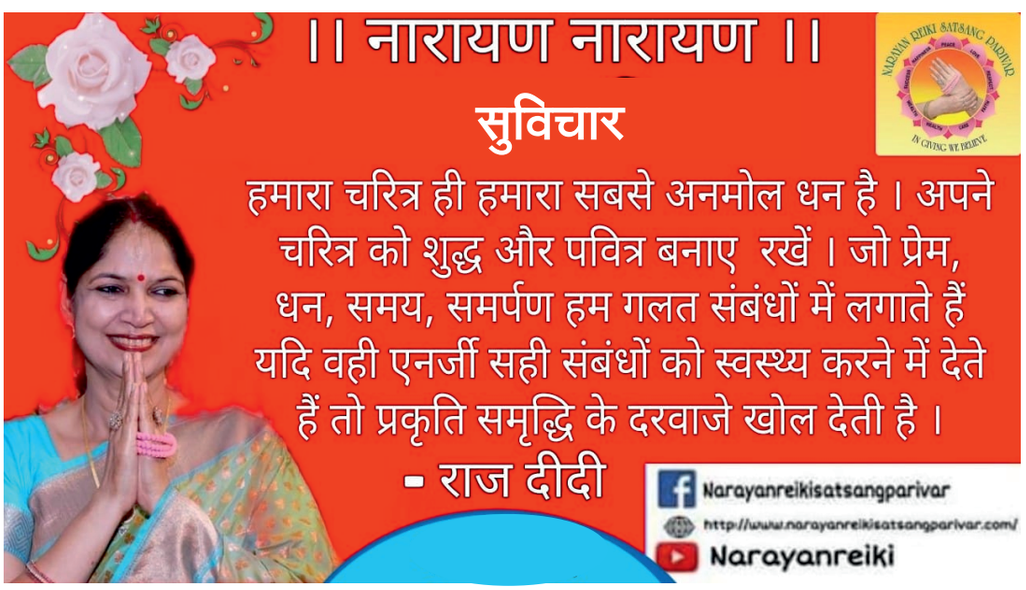

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

||Narayan Narayan||

Today, the reason of NRSP riding on the wave of success goes only and only to the attribute of cooperation among the NRSP team.

Cooperation is a beautiful energy filled word which determines the **success of any task.** The success of smallest task requires the cooperation of so many people. Let us take the example of small task of making tea. In the morning, the housewife makes tea. Just think about all those who all contributed in making tea? The water taken from the filter, themilk brought by the milkman, the sugar and the products of the tea leafcompany, the LPG gas burning in the gas burner is a resultant ofcooperation put in the small task of making tea.

This whole universe, us, you, entire life is going on because of cooperation. This universe and entire living are made up of small molecules. This world is running with the help of sun, moon, stars, living beings, non-living, flora. Not only this, but every part of our body also cooperates with each other, then our body functions. The action of walking is due to the cooperation of one foot with the other. The process of seeing is done with the cooperation of different parts of the eyes. The process of eating is done through teeth, tongue, saliva, esophagus and digestion is done by different juices of small, large intestine and stomach. Through the heart, blood circulates throughout the body which supplies oxygen and food to various cells from which energy is released and the body can move. Through the nose we take in oxygen and release carbon dioxide. What a wonderful feeling is cooperation. If we say that this creation is based on cooperation, then it will be much better. Helping someone with body, mind, money, making the other person smile, encouraging someone, helping someone is cooperation. **The principle of NRSP is cooperation**.

May this entire creation run smoothly, every person progress, achieve success- for this to happen, there should be happiness, peace, prosperity in every house, it is necessary that we keep nurturing the spirit of cooperation stronger and stronger- Such is the desire and prayer to the Lord.

Rest good

R. Modi

CO-EDITOR

Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office

Rajasthani Mandal Office, Basement Rajnigandha Building, Krishna Vatika Marg, Gokuldham, Goregaon (East), Mumbai - 400 063.

Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

Amravati - Tarulata Agarwal	:	9422855590
Ahmedaba - C. A. Jaiwini Shah	:	9712945552
Akola - Shobha Agarwal	:	9423102461
Agra - Anjana Mittal	:	9368028590
Baroda - Deepa Agarwal	:	9327784837
Bangalore - Shubhani Agarwal	:	9341402211
Bangalore - Kanishka Poddar	:	70455 89451
Bhilwada - Rekha Choudhary	:	8947036241
Basti - Poonam Gadia	:	9839582411
Bhandra - Geeta Sarda	:	9371323367
Banaras - Anita Bhalotia	:	9918388543
Delhi - Megha Gupta	:	9968696600
Delhi - Nisha Goyal	:	8851220632
Delhi - Minu Kaushal	:	9717650598
Dhulia - Kalpana Chourdia	:	9421822478
Dibrugadh - Nirmala Kedia	:	8454875517
Dhanbad - Vinita Dudhani	:	9431160611
Devria - Jyoti Chabria	:	7607004420
Gudgaon - Sheetal Sharma	:	9910997047
Gondia - Pooja Agarwal	:	9326811588
Gorakhpur - Savita Nalia	:	9807099210
Goa - Renu Chopra	:	9967790505
Gouhati - Sarla Lahoti	:	9435042637
Ghaziabad - Karuna Agarwal	:	9899026607
Hyderabad - Snehlata Kedia	:	9247819681
Indore - Dhanshree Shilakar	:	9324799502
Ichalkaranji - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Jaipur - Sunita Sharma	:	9828405616
Jaipur - Priti Sharma	:	7792038373
Jalgaon - Kala Agarwal	:	9325038277
Kolkatta - Sweta Kedia	:	9831543533
Kolkatta - Sangita Chandak	:	9330701290
Khamgaon - Pradeep Garodia	:	8149738686
Kolhapur - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Latur - Jyoti Butada	:	9657656991
Malegaon - Rekha Garaodia	:	9595659042
Malegaon - Aarti Choudhari	:	9673519641
Morbi - Kalpana Joshi	:	8469927279
Nagpur - Sudha Agarwal	:	9373101818
Navalgadh - Mamta Singodhia	:	9460844144
Nanded - Chanda Kabra	:	9422415436
Nashik - Sunita Agarwal	:	9892344435
Pune - Abha Choudhary	:	9373161261
Patna - Arvindkumar	:	9422126725
Pichhora - Smita Bhartia	:	9420068183
Raipur - Aditi Agarwal	:	7898588999
Ranchi - Anand Choudhary	:	9431115477
Ramgadh - Purvi Agrwal	:	9661515156
Surat - Ranjana Agrwal	:	9328199171
Sikar - Sarika Goyal	:	9462113527
Sikar - Sushma Agrwal	:	9320066700
Siligudi - Aakaksha Mundhda	:	9564025556
Sholapur - Suvarna Valdawa	:	9561414443
Udaipur - Gunvanti Goyal	:	9223563020
Vishakhapattanam - Manju Gupta	:	9848936660
Vijaywada - Kiran Zawar	:	9703933740
vatmal - Vandana Suchak	:	9325218899

International Office

Nepal - Richa Kedia	:	+977985-1132261
Australia - Ranjana Modi	:	+61470045681
Bangkok - Gayatri Agarwal	:	0066897604198
Canada - Pooja Anand	:	+14168547020
Dubai - Vimla Poddar	:	00971528371106
Sharjah - Shilpa Manjare	:	00971501752655
Jakarta - Apkesha Jogani	:	09324889800
London - C.A. Akshata Agarwal	:	00447828015548
Singapore - Pooja Agarwal	:	+659145 4445
America - Sneha Agarwal	:	+16147873341

|| 卐 ||

Editorial

Dear Readers,

||Narayan Narayan||

Secrets of success of Narayan Reiki Satsang family?Whenever someone asks Rajdidi this question, Didi always answers- **Team workand the other name for team work is cooperation.** Didi always saysthat it is only due to the support of the family that along with theresponsibilities of the house, morning and afternoon prayers arefeasible. Narayan Bhavan has been able to provide its servicescontinuously for 15 months, because of the constant support of itsvolunteers. Today the divine, grand, Narayan Bhawan is ready, it is areality, the reason for this is also cooperation.

Your guess is right. Readers, this issue of Satyug Patrika is based on thisbeautiful spirit of cooperation or team spirit.

All of you will continue to impart cooperation in every sphere of life,

with these best wishes,

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net
You Tube
narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

Call of Satyug

The spirit of cooperation is the basic unit on which the entire universe rests. This universe is the result of the mutual cooperation of billions and trillions of molecules. The earth is supported by its axis, so even while rotating the earth is in place. It is the mutual cooperation of the Moon and the sun that causes day and night. The five essential elements- Sky, Air, Fire, Water and Earth by their mutual cooperation create every particle of this universe.

Cooperation means the work done by a living for the completion of some task. **Giving helping hand to someone to do some work is called cooperation.** The developed society that we represent today is the resultant of the cooperation of many great personalities. Cooperation is the basis of life. Cooperation is like the Midas touch that makes the impossible, possible. In Hitopadesh, a story goes where many pigeons were flying in the sky with king of birds Chitragriva. Seeing the grain scattered on the earth, all the pigeons came down, but not Chitragriva. All the pigeons got caught in the hunter's net. In the time of crisis, bird king, Chitragriva advised them to fly and rise together. The pigeons pulled the net together and flew along with net. The hunter kept rubbing his hands in vain. This is the best example of cooperation.

Cooperation is a positive and effortful act which a person does voluntarily and happily. Indian scriptures and Indian history have always witnessed examples of cooperation in a big way. An example of this is the spirit of Vasudeva Kutumbam that sprouted, flourished and developed in our Indian culture. Where every person believes that this whole world is my family and the interest of this family is my own interest, then the cooperation automatically arises. Due to this feeling, the sense of fraternity develops among people and a person starts considering the happiness of others as his own happiness and the sorrow of others as his own sorrow and goes ahead for help. This sense of help develops qualities like kindness, affection, compassion in people and as a result people tread on the path of leading a meaningful life. The tendency of cooperation creates a very beautiful relationship of friendship in the human beings. Feelings of love and gratitude develop in your mind towards the person who cooperates with you and this feeling easily transforms into friendship. Krishna, Buddha, Mahavira, Maharshi Ved Vyas, Jesus Christ are the best examples of this friendly spirit, who not only considered the entire human race, but also animals and birds, plants as their integral part and worked for their development.

When a child is born, he first learns the spirit of cooperation from his family. Mother breastfeeds him, swings him in her arms, then father teaches him to walk by holding hands. Mother imparts the first letter of knowledge, then father takes the child to school. Sometimes grandmother feeds and at times aunt-uncle play with the child. At times (Tai ji)

aunt perform their duty as an elder mother and the child easily learns sharing and caring. The child first learns behavioral lessons at home then at school and then among friends. It is through the spirit of cooperation that psychological instincts develop within the child. The child's ability to make decisions develops, the child learns to solve problems and make decisions. Economic progress depends only on cooperation. The spirit of cooperation emerged rapidly in the recent Corona period phase in which the world went through in the last few days. Many doctors opened their hospitals free of cost to unknown people, many people gave their lands to build emergency hospitals. Countless organizations made arrangements for door-to-door delivery of medicines and food. It was the time of world crisis but the spirit of cooperation overcame it and today again the whole world has restored its original pride.

We can help parents in small tasks of the house, such as cleaning, cooking, washing dishes, washing clothes and other odd jobs. We can help at home by bringing milk, fruits, vegetables etc. from the market.

Electricity, water and telephone bills can be paid on time. We can also help each other in the house by keeping things at the designated place, serving food, picking up utensils from the dining table after eating and keeping them in the kitchen teaching the younger brothers and sisters. The younger members of the house can help by watering the plants in the garden, not throwing paper here and there and after playing keeping the toys in the designated place. We can also cooperate by arranging medicines and giving them to the person who falls ill in the house. In this way, the house will brim with happiness due to mutual cooperation. Socially, we can contribute to the nation by making good use of natural resources saving electricity, water, paying income tax on time. By helping neighbors when they are in need, standing shoulder to shoulder with friends in times of need, helping relatives as much as possible can develop a sense of cooperation.

I believe that whether you do yoga or not, but you must cooperate with others because the spirit of cooperation is what sustains this universe in its eternal form.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Meghna Taparia on her birthday (2nd July) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Namrata Rathi on her birthday (23rd July) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

Wisdom Box is one such a column of our Satyug magazine which is very easy simple and informative. It is so simple that the reader can easily imbibe it in his day-to-day life and lead a seven-star life. Here are some such tips: -

1) The author of The **Magic of Thinking Big** writes that a lot of thoughts come to our mind throughout the day, The author says that there are "two foremen" means **"two watchmen"** are seated in our brain.

The author named them **Mr. Negative and Mr. Positive.** As soon as we speak louder and we start arguing, negative waves start entering our body. These negative waves are within the body, and they are a big reason for our being unwell, due to these waves our nature, our prosperity our behavior all become unhealthy.

2) The louder our voice, the more our body, mind, wealth and relationships are affected in a negative manner. These waves are invisible. It affects both health and wealth. Both the waves are very active, says Mr. David, the author of "The Big Magic of Big Thoughts".

3) This nature, the universe never gives us anything on its own, it just returns in multiples whatever we have given.

If someone is in need of anything we should serve either physically or provide material help. If you cannot do anything, then you should pray to God.

Nature does not give, it only returns in multiples, what you have given to others.

4) Everyone wants good health, abundant wealth, and a blissful life, full of happiness, enthusiasm, and joy. Raghav explains that everyone tries to achieve these things. Despite hard work, sometimes these things are not achieved because some precautions have to be followed. Why do people often hold on to the event that has happened in the past.

Nothing is going to be gained by thinking about that incident. Then why are we holding on to those relationships which have ended. Why do we hold on to the pain and sorrow that someone gave us some time ago or years ago? There is nothing to be gained by holding them, except the hurt. Leave the incident, which is bothering you, relax.

5) Quitting is our choice. Kalyani also taught that it is better to let go off, what is hurting us.

6) **Nature gives us the opportunity to make choices at every stage**. It is up to us what we choose. If we choose right and proper, then it will give us peace of mind which we need. But if we choose wrong by getting carried away in thoughts, then it gives us mental

disturbance.

It gives us stress and tension. Why?? when nature gives us a chance to choose?

Choose the right and appropriate, keeping your life values in mind. Maybe we have to work a little hard, but this hard work will bring you happiness and only happiness in the end. It will give success.

7) When you keep hurt inside you, it is like holding a glass of hot water, the longer you hold it, the more damage it will do to you. If you are hurt, you will have to carry this burden everywhere.

Unfavorable circumstances give you trouble, adversity, and distressing events. It is better to let go and move on in life.

8) If you are leading a happy life then it is certain that you do prayers for others and get manifold blessings from the universe.

9) Didi asked the satsangis to make a notebook and write daily how they help others- With money, through prayer or by any other means.

Didi emphasized that whatever good we do, we will get in manifold.

10) It is good that before any accident happens, we should take precaution.

If you keep collecting blessings in life, then there will be no need for medicine.

Friends, follow these small tips and lead a seven star life easily.

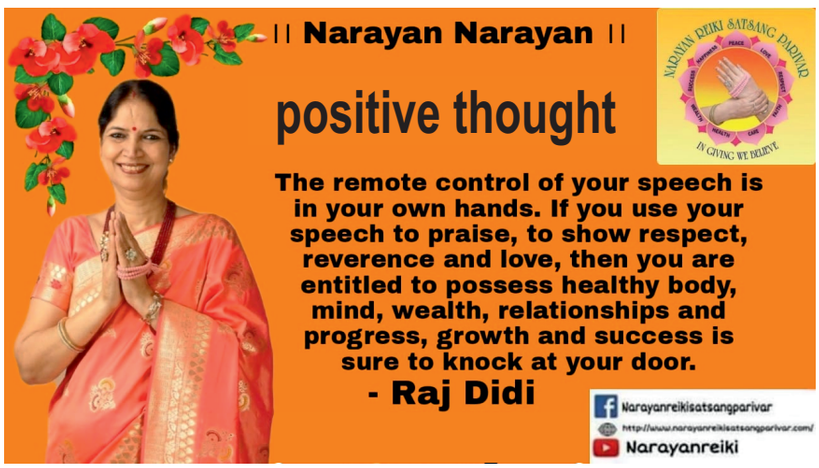

Youth Desk

Working together is called cooperation or collaboration.

Cooperation is a conscious state in which organized and collective efforts are made because there is a common objective. Everyone participates and there is an exchange of actions and ideas. The interaction is positive and there is an intention to help. All the persons fulfill and perform their responsibilities with honesty and loyalty.

Narayan Reiki Satsang Parivar is an excellent example where you can observe amazing spirit of cooperation. From the very beginning, the team formed under the leadership of Raj Didi, the way small to huge sessions were organized - people were left flabbergasted. No one knew when and how the work got done. In today's context, as a result of this cooperation, Narayan Reiki Satsang family is making waves around the world. All the activities are undertaken very smoothly- Be it the prayers being held at Narayan Bhavan, training sessions of Narayan and Karuna Reiki, prayers coming from all over the world and many small and big works going on at the center.

The success of any house, company or country depends on the mutual cooperation of its members. When they walk hand in hand, records are created.

When the work of building Ram Setu was going on in full swing, a small squirrel was sitting on the beach watching the whole scene. It came to its little mind that God needs cooperation and when all these monkeys are helping him, then I should also help in this noble work.

That little squirrel observed for a while and even tried to lift the stone but could not succeed. Despite this, it did not give up and after much thought, it found a way to cooperate. It would first dip its tail in the water of the sea, then come back to the shore, wag its tail on the sand and the sand particles that stuck to its tail would be thrown on the bridge. It was busy with the work for the entire day. Some monkeys saw it and even made fun of it, but Shri Ram, who always respected people and even the smallest particles, realized the passion of squirrel to help. At dusk, Shri Ram called the squirrel and patted on its back, praised, and thanked it. **It is said that from that day onwards the body of the squirrels, bear the fingerprints of Ram ji in the form of lines.**

If that squirrel would have thought otherwise that what help I can provide in such a big task, would she have attained this immortal affection? That's why don't think, just get involved. **Help as much as you can.** Your small contribution can prove to be very important not only for others but also for you.

Youth power is unlimited. With your power contribute in betterment of every person and environment associated with you and make Satyug a reality.

॥ 卐 ॥

Children's Desk

In this issue we are highlighting the importance of Team Spirit.

What do you mean by team spirit? Rajdidi says in every accomplishment of yours, you have the support of so many persons associated with you. It is because if their support and guidance you have achieved what you have set to achieve. A small act of making tea, has so many hands involved including the hand of the labor who pluck the tea leaves, to the factory hands who are involved in the processing, to the person who buys and the seller who sells, the person who makes the tea and the person who serves, to the one who drinks the delicious tea. So, whenever we say we are thankful for the delicious, rejuvenating cup of tea, our thanks go to all these people.

Team spirit is very essential for growth and progress whether it is personal or in the official business front.

When the board results come, the principal feels elated to have achieve 100% result. Yes, the school is proud of the child who has topped but quantitatively when every student has scored a reasonably good score, the school achieves name and fame.

Cricket is a very popular sport. The game has 10 players, and the win happens only if all the players give their best. It is also essential that team captain ensures team spirit and cooperation among all the players. Then on the guidance of the captain every member gives the best and it is a win win situation.

When we speak of team spirit, we need to have one person holding the team together who is the team leader or captain and that person should not be judgmental, should understand the need of every member of the team and give support in favorable and in not so favorable situations and stand by the team.

NRSP is a great example of team spirit functioning with Rajdidi supporting and guiding her team to give its best and hence the organization has globally achieved great heights. NRSP flag is flying high.

When we are part of any team, we also need to ensure that our performance is in lieu with the growth and progress of the team. We should function with the awareness that my action should be for the best performance of the team. When we give our best to the team not only, we grow but along with the team name fame and money will be ours too.

Bowing in reverence to the NRSP team spirit.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Kedar on his birthday (29th July) for a seven-star life, success and happiness in all spheres.

Under The Guidance of Rajdidi

NRSP's growth and progress is a true example of how under the guidance of its Guru and mentor Rajdidi every member has only and only one thought - the progress of the organization and to work in unison to achieve that. That is the secret of NRSP's growth. Whether it is Rajdidi, the founder of the organization or its able trustees, to the angels who support Rajdidi, to the team at Narayan Dham, to all the Centre heads and their respective team, to every Satsangi who is a NRSP -only one thought primarily dominates - What best can I do for NRSP?

The success of the online Narayan bhavan is success story of its dedicated team. Few inspirational sharing's from its treasure clove.

Results of shift from Reacting to Responding

My boss in the office is in the habit of taking abrupt leaves for days together, that results in extra work burden on me. She is impolite and rude by nature. Every time, she is back from leave, I gave negative vibrations by my behavior and actions. This resulted in a drift between two of us, for days together.

Recently this happened again that she had left for vacation. I was all prepared to snap at her when she would come. Few days back, I learnt from your Satsang that we have to respond and not react. So, this time when she was back, I didn't express any resentment, instead just requested her to guide me before leaving. Since then, I am amazed at her changed behaviour as she speaks very affectionately and also praises my work and my handwriting in front of my colleagues. My husband, my colleagues and I am myself are astonished with this drastic change in her. All thanks to your virtuous guidance Didi.

Didi applauded her and said that nature has again reaffirmed that when we react, we ourselves refrain the prosperity to enter in our lives and when we respond, nature ensures that prosperity comes and stays in our lives.

Sashmita ji, Orissa : Didi, under your auspices I am practicing the discipline of thoughts, words and actions since a month now. As a result, my husband expresses his gratitude on dining table, for the food. Also, he thanks me for emphasizing on speaking positive words only. It is nothing less than a miracle that in 18 years of our married life, a month has passed by, without any fight or raised voice amongst us.

Earlier when my parents of 80 years of age used to visit me, I used to get annoyed

and shout when the food spilled over etc. But this time, for each of the four days that they stayed, my thoughts were, **Narayan himself has come to my home, Narayan is making my home sanctified and showering divine blessings.** Didi Thank you for your esteemed guidance.

Sharing from USA : Didi, yesterday when my husband came back home from work he was in a very angry mood and shouted at me. Since I had attended the morning session wherein you had explained about response and reaction so I did not react and continuously was saying the Narayan Prarthana and also was asking guidance from Narayana to forgive me if there was any fault of mine. The night passed peacefully and, in the morning, it was no less than a miracle when my husband asked forgiveness from me.

Didi says nature itself bows down when we keep our feelings pure from within and meditate and stay calm. You will be called powerful when the person in front is behaving unfavorably and you also have full ability to behave adversely, yet you are responding calmly instead of reacting. According to Narayan Shastra, then you are truly powerful.

Nagpur Satr - jeevan jeene ka naya Andaz - 21 July2022

Inspirational Memoirs

Helping Bridge

Nalapur village was situated in the middle of hills and forest. The village was named so because of the stream which ran in the outskirts of the village and had stopped the progress of the village. It became so terrible in the rains that villagers dare not put a foot in it. This long and wide rivulet completely cut off the village from other areas. For four months the residents of Nalapur village used to be completely isolated from the outside world. When someone was a victim of a serious illness or, a woman's health deteriorated, then there would be a lot of trouble. In this situation, when it was urgently required to take the patient to the hospital, this stream of water was like a messenger of death. People tried to step in through canoe or boats, but due to heavy flow of water, even strongest drowned. In this village, lived a boy named as Shivnarayan who was intelligent, educated and an understanding person. He was a person of the newer generation with new thoughts and views. He was very sad about his village's backwardness. Many a times he tried to collect people together and convince them to build a bridge, but all couldn't come in consensus. If anyone would agree to Shivnarayan, it was Hakim Sir. The villagers used to respect Hakim Sir a lot. He used to treat their illness. For villagers, he was like the last resort.

During the rains, the stream was overflowing at danger mark. The village was totally cut from the outside world. From this situation, all the villagers were in shock. During night, Hakim sir suffered a stroke. Seeing his unconsciousness, the villagers came together. Anyhow, they spent the night, everyone wanted that Hakim Sir should reach the hospital or at least he is taken to the doctor. But that was just a wish. Nothing could happen due to the overflowing stream. Hakim Sir passed away because he could not receive treatment. Shivnarayan was very sad. He said, "If you all would have agreed to me, this situation would have not arisen at all." At that time all the villagers' took an oath that they will make a bridge out of their earnings. During summers, when the stream of water was low, villagers came in together and started making the bridge. In the village, every person was ready to make the bridge with what all they had. When the government authorities came to know about the building of the bridge, they also supported the villagers and provided them with the necessary help. Due to this, the villagers got more excited. Everyone came in together. Gradually, the time came for inauguration of the bridge. With Shivnarayan, other villagers went to the district president requesting him to inaugurate the same. The president accepted it. At the day of inauguration of the bridge, the bridge was decorated. For the first

time, it was such a big occasion in the village. The villagers requested the authorities to cut the ribbon. The authorities were very glad seeing the villager's excitement and the district collector entrusted the task of cutting the ribbon to the elderly people of the village. During the time of inauguration of the bridge, the president told, the name of this bridge should be, "Helping Bridge'. He further added, "Do you know why I made this bridge inaugurated by you, as this bridge is built up by your consistent efforts? This bridge will open the gates for the progress of the village."

Recession

In 1930, there was a period of recession in England. There was an old cloth mill which was running losses. The owner felt that if he tried to get out of this recession, then how would he do it. When the owner was not understanding anything, he thought it would be appropriate to inform his workers that the mill could no longer employ them. One day the mill owner called the workers and said – "The losses have increased so much that the mill is now going to be declared bankrupt. Our long friendship with you is about to end."

The next day all the workers entered the owner's cabin together. Each of them kept their bank passbook on the owner's table and said to the owner, "We all are with you, you take whatever amount of money we have and keep the mill running after meeting the deficit. Don't you lose heart. We will definitely get success. The courage and cooperation of the workers towards the employer inspired him to try again.

The owner reached the bank with those thousands of pass books. The Bank officials were also surprised to see so many pass books. After thinking for some time, they came to the conclusion that the future of the mill whose owner and workers have so much cooperative can never be in dark. So, the bank officials decided to help the mill by lending them money. The mill was restarted, and the clouds of trouble gradually began to dissipate.

In the end, the cooperation of the workers and the courage of the owner gave them the strength to emerge victorious from this crisis (recession).

Friends, whenever adverse situations arise, work with courage as well as cooperation.

Amitabh and Aslam

Once upon time there was a child called Amitabh. He lived in a village with his parents. It so happened that recently he was coming home late in the evening.

His mother doubted whether he had fallen into bad company. After all, what is the reason for asking for money every day and coming late? Mother expressed her doubts to Amitabh's father.

Father called Amitabh and asked him lovingly. Amitabh repeatedly kept saying, 'There is no such thing, father, you are unnecessarily doubting me. I am not doing any wrong.'

Father got angry and he slammed Amitabh. Amitabh left crying. From that day he stopped asking for money. But there was no change in the habit of coming home late.

Time passed by. Annual examinations were held. Mother was very worried, but when the result came out, she was astonished, Amitabh had stood first again. She was very scared thinking he is into bad habits. But all her doubts turned out to be unfounded, she hugged him.

"Ma do you know Aslam has come second."

This was the fourth time when Amitabh had said, Aslam has come second. Mother said, what is the matter today Aslam is being praised a lot, who is this Aslam? "Aslam is my friend. He is a newcomer to school this year. He doesn't have a father and his mother works very hard to educate him. Aslam is also very hard working. No one believed that he could do well in school. But his hard work finally paid off." Amitabh face glowed saying this.

"But not without your support. I could not have imagined this success." Shocked, Ma and Amitabh turned to see Aslam standing at the door, Amitabh told his mother, "This is my friend Aslam."

Mother lovingly took him inside. Aslam bowed down and touched mother's feet." Aunty, if Amitabh had not helped me, let alone passing in second class, I did not expect to pass. Maybe I would have missed my studies."

Tears swelled up in Aslam's eyes. My mother is very poor. She can't even buy books for me. Amitabh bought books for me with his own money, deposited my fees, and not only that he helped me with my studies too. I owe this to Amitabh.

Ma lovingly embraced both the boys. The secret of Amitabh coming home late, asking for more money was understood by her.

॥ 卐 ॥

Noida Satr -

Jeevan jeene ka naya Andaz -

10 July 2022

Mantra for healthy relationships by Rajdidi

Husband's Statement-

Thank you for coming in my life, you are like Goddess Laxmi, you are the Annapoorna of my house, you are a form of Saraswati; because of you I am living a prosperous, splendid magnificent and vital life. Appreciate the qualities of your partner and also say affirmations about the qualities you want in your partner. Now repeat what you have achieved in life and what you want to achieve in the upcoming life. After completing your statements say- thank you for being part of my life, I love you, I like you, I respect you.

Wife's Statement -

Thank you for being a part of my life. Because of you I am leading a seven-star life, a life full of abundance and growth. I love you, I like you, I respect you . Now appreciate the qualities of your partner and say that your life is good because of these traits. Also repeat the qualities you want in your life partner and give affirmation that because of these qualities I am living a beautiful life .

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com